कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English (In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय Economics

परीक्षा का दिन Monday

दिनांक 19-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक [ ]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया ... है।165/2019

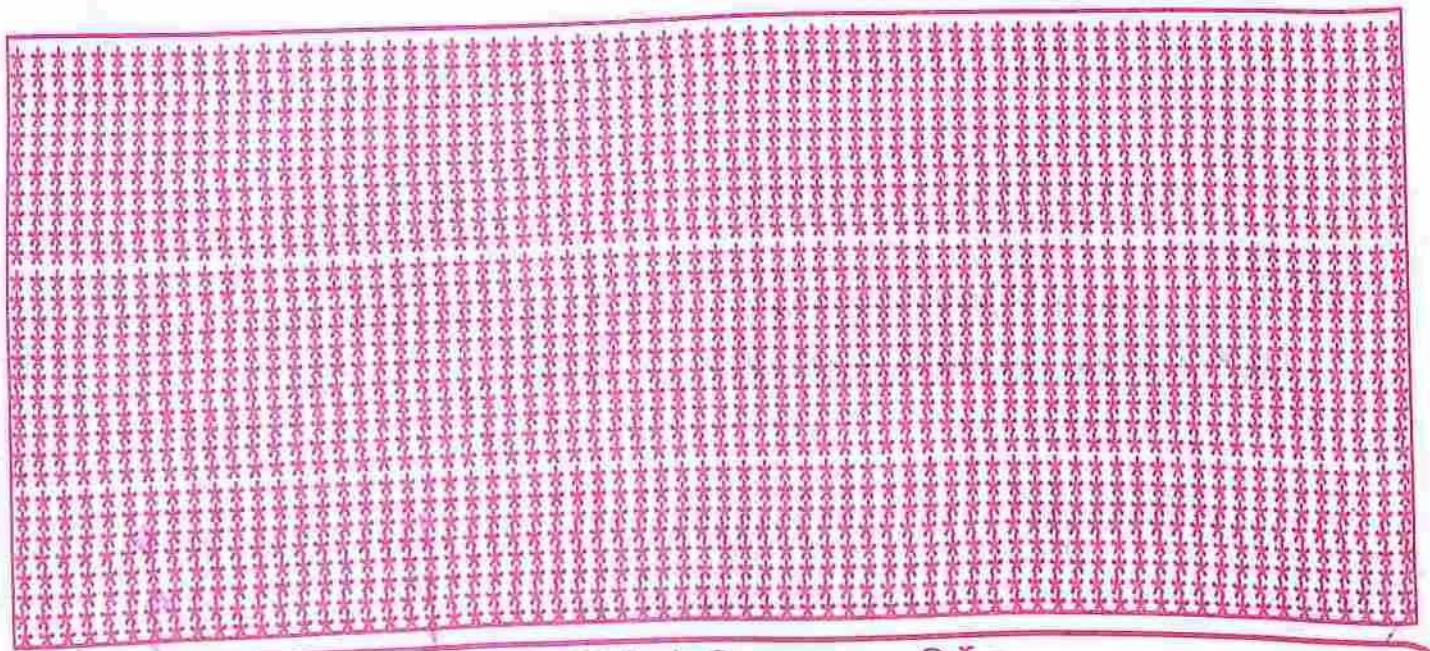

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

SECTION - 'A' (1 NUMBERS)

Q1
Ans. व्यष्टि अर्थशास्त्र (micro economics) में व्यक्तिगत इकाईयों का अध्ययन किया जाता है। (1)

Q2
Ans. उत्पादन संभावना वक्र :- यह वक्र दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न (उत्पादन बिंदुओं) संयोगों को बताता है जिनका उत्पादन एक अर्थव्यवस्था में दिए गए तकनीकी व साधनों के माध्यम से साधन रोजगार की स्थिति में किया जाता है। यह मूल बिंदु के नतोदर होता है। इसे रूपांतरण संभावना वक्र भी कहते हैं।

Q3
Ans. अर्थव्यवस्था :→ सामान्य शब्दों में अर्थव्यवस्था से अभिप्राय एक देश की आर्थिक स्थिति से लगाया जाता है। अर्थव्यवस्था प्राय: तीन प्रकार की होती है :- (अन्य शब्दों में अर्थव्यवस्था एक देश की अर्थ (धन) की व्यवस्था से है)

① पूँजीवादी अर्थव्यवस्था
समाजवादी अर्थव्यवस्था
② मिश्रित अर्थव्यवस्था
③ अर्थव्यवस्था ही केन्द्रीय प्रणाली की माप होती है (1)

1 + 1

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

Q4
Ans. लागत (Cost) :-
एक उत्पादक द्वारा अपने उत्पाद को तैयार करने के लिए प्रयुक्त आगतो पर जो कुछ भी व्यय किया जाता है लागत कहलाती है।

Q5
Ans. उत्पादन (Production) :-
किसी वस्तु या सेवा में उपयोगिता का सृजन करना या निर्माण करना ही उत्पादन कहलाता है। अर्थात् उत्पाद का निर्माण करना।

Q6
Ans. बाजार :-
बाजार से अभिप्राय यह वह संपूर्ण क्षेत्र होता है जहाँ क्रेता व विक्रेता के मध्य स्वतंत्र प्रतिस्पर्धात्मक संबंध होते हैं।
दूसरे शब्दों में जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता है बाजार कहलाता है।

Q7
Ans. दो मध्यवर्ती वस्तुएँ :-
(1) ब्रेड उत्पादन के लिए गेहूँ का उपयोग।
(2) कपड़े के निर्माण के लिए धागों का उपयोग।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q8 Ans. वस्तु विनिमय प्रणाली :-

वस्तु विनिमय प्रणाली से आशय वस्तु के बदले वस्तु के विनिमय से है। यह एक प्राचीन प्रणाली है।

Q9 Ans. पीगू के अनुसार "राष्ट्रीय आय से तात्पर्य समाज की उस वस्तुपरक आय से है जिसे मुद्रा के रूप में मापा जा सकता है। इसमें विदेशों से प्राप्त आय को भी शामिल किया जाता है।

Q10 Ans. लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार संसद के समक्ष बजट को प्रस्तुत करती है।

* SECTION - 'B' * (2 NUMBERS)

Q11 Ans. आर्थिक विश्लेषण की मान्यताएँ :-

(1) उपभोक्ता का व्यवहार विवेकशील माना गया है अर्थात् एक उपभोक्ता अपनी बुद्धि कौशल इत्यादि के बारे में समझ एवं उचित निर्णय लेने में सक्षम है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) एक उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को अधिकतम करना चाहता है अर्थात् स्वयं की आर्थिक स्थिति मजबूत करना चाहता है।
उसे वैकल्पिक वस्तु की पूर्ण जानकारी होती है।

1+1

Q12 Ans

तटस्थता मानचित्र :-
जब एक ही (रेखाचित्र) मानचित्र पर एक से अधिक तटस्थता वक्रों को दर्शाया जाता है तो इसे तटस्थता मानचित्र कहते है।

रेखाचित्र :-

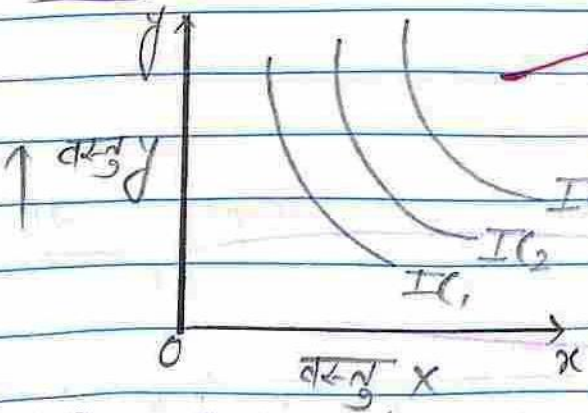

उपरोक्त रेखाचित्र में IC_1, IC_2, IC_3 तीन तटस्थता वक्रो को दर्शाया गया है।
इसके अंतर्गत ऊँचे तटस्थता वक्र उच्च संतुष्टि स्तर को व नीचे तटस्थता वक्र निम्न संतुष्टि स्तर को दर्शाते है।
इसलिए एक उपभोक्ता को IC_1 की तुलना में IC_2 व IC_2 की तुलना में IC_3 पर अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q13 Ans. एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता :- (प्रतियोगिता) ?

यह बाजार का वह स्वरूप है जिसमें एक वस्तु के अधिक क्रेता व विक्रेता होते है। फर्मों को उद्योग के स्थान पर समूह शब्द का प्रयोग किया जाता है तथा इसके अंतर्गत वस्तु विभेद पाया जाता है। अर्थात् वस्तुओं में भिन्नता होती है। तथा AR वक्र फर्म का मांग वक्र होता है। इसमें $Ed > 1$ होती है।

Q14 Ans. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) :- ?

किसी देश में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को ही सकल घरेलू उत्पाद कहते है।

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{mp}) :-

C (उपभोग व्यय)
+
I (निवेश व्यय)
+
G (सरकारी खर्च)
+
(X - m) (शुद्ध निर्यात)

$= GDP_{mp} = C + I + G + (X - m)$

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q15 Ans. राष्ट्रीय आय की गणना में आने वाली कठिनाईयाँ :-

(1) स्वयं के रोजगार से प्राप्त आय की गणना कठिन होता है।

(2) राष्ट्रीय आय की गणना में शेयर बाजार की क्रियाएँ केवल कागजी लेनदेन होने से सट्टा बाजार की आर्थिक क्रियाओं को शामिल नहीं किया जाता

1 + 1

Q16 Ans. समग्र मांग :- (AD)

एक दिए हुए आय व रोजगार के स्तर पर एक देश में वस्तुओं और सेवाओं की जो कुल मांग की जाती है उसे समग्र मांग कहते है।

रेखाचित्र :-

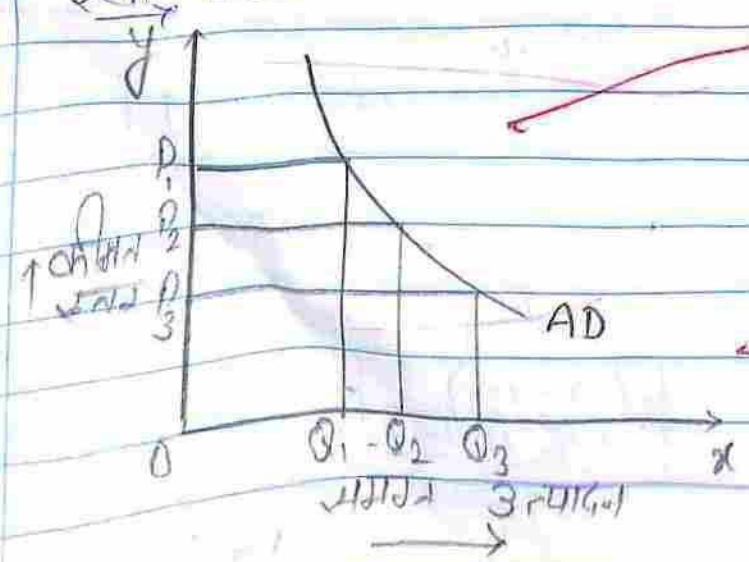

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q17 Ans. घाटे का बजट :-
घाटे के बजट से आशय उस बजट से है जब सरकार का व्यय, आय से अधिक हो दूसरे शब्दों में जब सरकार का कुल भुगतान, कुल प्राप्तियों की तुलना में अधिक हो तो वह बजट घाटे का बजट कहलाता है।

कुल आय	<	कुल व्यय
T.I	<	T.E

Q18 Ans. नकद विहिन लेनदेन के माध्यम :-

(1) ATM मशीन द्वारा :- इसके अंतर्गत क्रेता द्वारा सीधे विक्रेता के खाते में राशि हस्तानांतरित कर दी जाती है इसके लिए दोनो पक्षों को एक ही बैंक में खाता होना चाहिए। तथा बैंक के IFSC नंबरो की भी जानकारी होनी चाहिए।

(2) ऑनलाइन ~~एक~~ एप द्वारा :- इसके अंतर्गत कई बैंको द्वारा अपने E-Wallet APP को जारी किया गया है। इसकी सहायता से क्रेता द्वारा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

eq. (1) & (2) से :-

L.H.S = R.H.S

$OY_3 \, OX/2 = OY_2 \, OX/2$

$OY_3 \neq OY_2$

∴ तटस्थता वक्र एक दूसरे को नही काटते है।

Q20

Ans. AR, MR = ?

कुल बिक्री (इकाईयो मे)	TR	AR = $\frac{TR}{Q}$	MR = $\frac{\Delta TR}{\Delta Q}$
1	20	20	20
2	36	18	16
3	48	16	12
4	56	14	8

Q21

Ans. पूर्ण प्रतियोगी बाजार :-

पूर्ण प्रतियोगी बाजार, बाजार की वह स्थिति है जिसमे अनेकों क्रेता व विक्रेता होते है। फर्मो का समूह

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उद्योग कहलाता है। फर्म कीमत निर्धारक नहीं अपितु कीमत स्वीकारक होती है। उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत पर फर्म अपने उत्पाद की कोई भी मात्रा बेच सकती है, लेकिन कीमत में परिवर्तन नहीं कर सकती है।

पूर्ण प्रतियोगी बाजार में फर्म का औसत आगम वक्र को निम्न सारणी व रेखाचित्र द्वारा समझा सकते हैं:-

सारणी :-

Q	AR	MR	TR
1	10	10	10
2	10	10	20
3	10	10	30
4	10	10	40

रेखाचित्र :-

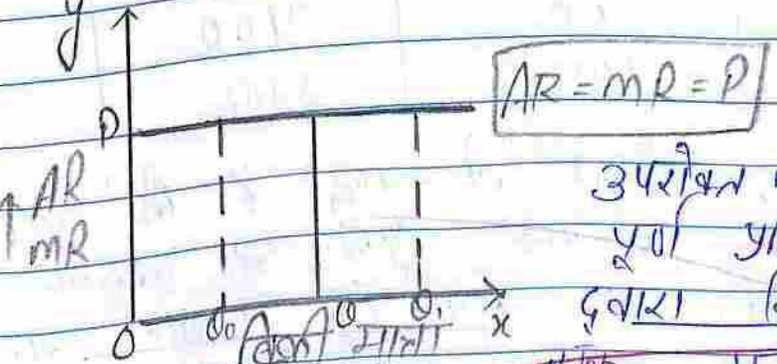

उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत पर एक फर्म अपने वस्तु की किसी भी मात्रा बेच सकती है। इस स्थिति में $AR = MR = P$ होता है। व $Ed = \infty$ होती है। चित्र में $AR = MR = P$ दिखाया गया है कि OP कीमत पर मात्रा OO_0, OO_0 व OO_1 है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q22

Ans. बाजार संतुलन :-

बाजार संतुलन से आशय उस अवस्था से है जब बाजार मांग व बाजार पूर्ति बराबर हो।

$$D = S$$

दूसरे शब्दों में बाजार में बुलशाली शक्तियों का प्रभुत्व समाप्त हो जाए तथा न्यून मांग व न्यून पूर्ति की स्थिति हो।

इसे निम्न तालिका द्वारा समझा सकते हैं :-

वस्तु की कीमत (₹)	बाजार मांग	बाजार पूर्ति
10	500	100
20	400	200
30	300	300
40	200	400
50	100	500

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 30 ₹ की स्थिति में बाजार पूर्ति व बाजार मांग में साम्य की स्थिति है। अर्थात यह स्थिति बाजार संतुलन की स्थिति है। संतुलित कीमत 30 ₹ है। क्योंकि यहाँ मांग व पूर्ति दोनों 300, 300 बराबर है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

रेखाचित्र :-

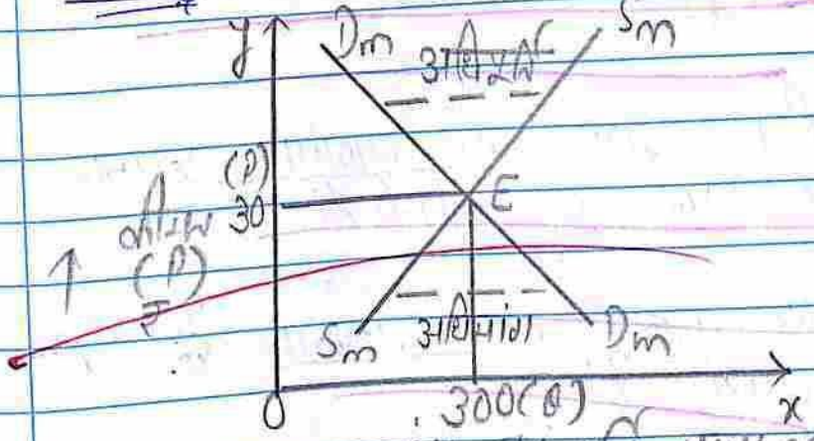

उपरोक्त रेखाचित्र में Ox अक्ष पर मात्रा Q व Oy अक्ष पर कीमत P को दर्शाया गया है। तथा बाजार संतुलन E बिंदु पर तय हो रहा है क्योंकि यहाँ संतुलित कीमत पर मांग व पूर्ति दोनों बराबर है। तथा बाजार की साम्य E बिंदु पर है क्योंकि यह बाजार की बलशाली शक्तियों का अभाव है।

Q23 राष्ट्रीय आय की विशेषताएँ :-

(1) राष्ट्रीय आय का संबंध देश की अर्थव्यवस्था से होता है।

(2) राष्ट्रीय आय का संबंध निश्चित समयावधि से होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(3) राष्ट्रीय आय का संबंध एक देश की कुल आय से है।

(4) राष्ट्रीय आय की गणना प्रचलित बाजार कीमत पर की जाती है।

(5) राष्ट्रीय आय की गणना देश की मुद्रा से की जाती है।

(6) राष्ट्रीय आय ही प्रति व्यक्ति आय का आधार प्रस्तुत करती है।

(7) राष्ट्रीय आय की सहायता से एक देश की आर्थिक स्थिति ज्ञात होती है।

Q24 Ans. मुद्रा के कार्य :- ?

(1) विनिमय का माध्यम :-

मुद्रा विनिमय का एक उचित माध्यम है क्योंकि मुद्रा की सहायता से ही वस्तुओं और सेवाओं का लेनदेन तथा विनिमय संभव हो पाता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि मुद्रा के आगे व पीछे वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(2) मूल्य निर्धारण में सहायक :- मुद्रा की सहायता से ही किसी वस्तु का मूल्य निर्धारण में सहायता मिलती है किसी वस्तु की कीमत कितनी है तथा उसकी कितनी इकाईयों का उपभोग किया जाना है यह मुद्रा की सहायता से ही संभव हो पाता है।

(3) बचत में सहायक :- आय का वह भाग जो उपभोग से बच जाता है बचत कहलाता है। अर्थात् मुद्रा को बचत के रूप में स्वीकार करके भविष्य में निवेश के रूप में उपयोग किया जा सकता है। तथा इस प्रकार मुद्रा को संचय कर इकट्ठा किया जा सकता है।

(4) भावी भुगतानों का आधार :- मुद्रा की सहायता से भावी भुगतानों के आधार की सुगमता प्रकट होती है। तथा हम ऋण, उधार ऋण इत्यादि का भुगतान मुद्रा की सहायता से भविष्य में कर सकते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुद्रा का विशेष महत्व है लेकिन फिर भी अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा का सीमित उपयोग करने की सलाह दी है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q25 Ans.

समष्टि आर्थिक साम्य :-

समष्टि आर्थिक साम्य उस स्थिति मे होता है जब अर्थव्यवस्था में समग्र मांग व समग्र पूर्ति दोनों बराबर होती है। अर्थात् AD = AS

इस प्रकार हम कह सकते है कि यहाँ इस स्थिति मे अधिमांग व अधिपूर्ति का अभाव होता है।

इसको निम्न रेखाचित्र द्वारा समझा सकते है :-

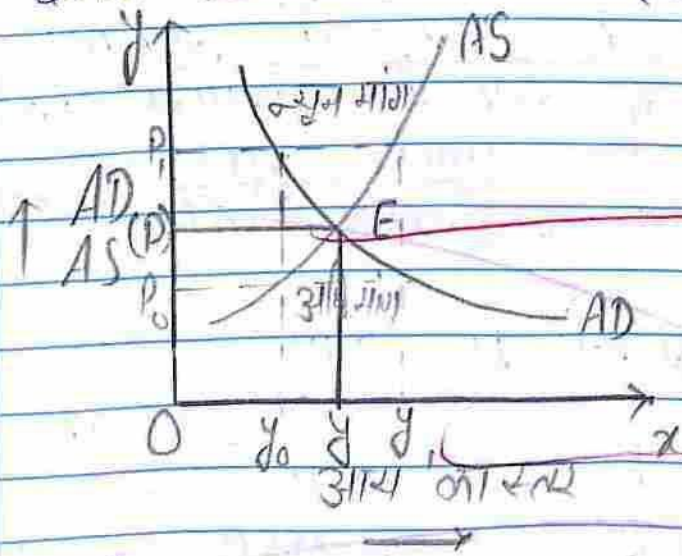

उपरोक्त चित्र मे OX अक्ष पर आय स्तर व OY स्तर पर AD व AS को दिखाया गया है। तथा E बिंदु पर साम्य स्तर को दिखाया गया है क्योंकि यह AD = AS है। तथा यहाँ पर बलशाली शक्तियों का प्रभुत्व समाप्त है। तथा OY आय के स्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

पर OP कीमत को निर्धारित किया गया है। यदि अधिमांग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो रोजगारों में कमी की जाती है तथा संतुलन को पुनः साम्य बिंदु तक लाया जाता है।
यदि अर्थव्यवस्था में न्यून मांग की स्थिति उत्पन्न होती है तो इस अवस्था में रोजगार में वृद्धि की जाएगी तथा साम्य का निर्धारण किया जाएगा।

Q26

Ans. $MPC = 0.8$, $K = ?$

we have that :-

$$\boxed{K = \frac{1}{1 - MPC}}$$

$$K = \frac{1}{1 - 0.8} \Rightarrow \frac{10}{0.2}$$

$$K = \frac{10^5}{2_1} = 5, \quad \boxed{K = 5}$$

Q27

Ans. बजट :-
बजट सरकार की आय व व्यय का लेखा - जोखा होता है जिसमें आगामी वर्षों से संबंधित आय - व्यय का ब्यौरा होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

बजट का उद्देश्य :-

(1) बजट न केवल विकास को प्रभावित करता है बल्कि विकास की दिशा का निर्धारण भी करता है।

(2) बजट के अंतर्गत विकासात्मक प्रावधानों का उपयोग जनता पर अधिक पर से किया जा सकता है।

(3) अवस्फीति व मुद्रास्फीति में बजट प्रावधानों का उपयोग कर समस्या का निवारण संभव हो पाता है।

(4) बजट कई प्रकार का होता है जो विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर तथा विकास कार्यों हेतु निर्धारित किया जाता है।

(5) बजट एक निश्चितकालीन अवधारणा है जो प्रतिवर्ष लागू होता है।

(6) बजट में जो प्रावधान होते हैं वो सरकार के द्वारा विकास कार्यों के लिए निर्धारित किए जाते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

SECTION - 'D'
(6 Numbers)

Q28. Ans. मांग की कीमत लोच :- किसी वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन के फलस्वरूप उस वस्तु की मांग में जो आनुपातिक परिवर्तन होता है। मांग की लोच कहलाता है।

मांग की लोच :- $\dfrac{\text{मांग मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$

गणितीय रूप में :-

$$ed = \frac{\frac{\Delta Q}{Q}}{\frac{\Delta P}{P}}$$

$$ed = \frac{\Delta Q}{Q} \times \frac{P}{\Delta P}$$

OR

$$ed = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

$\Delta Q = Q_2 - Q_1$, $\Delta P = P_2 - P_1$

P = प्रारंभिक कीमत, Q = प्रारंभिक मांग मात्रा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मांग की लोच की श्रेणियाँ :-

(1) पूर्णतया लोचदार मांग ($e_d = \infty$) :-

पूर्णतया लोचदार मांग से अभिप्राय प्रचलित बाजार कीमत पर मांग की लोच / मांग मात्रा का अनंत होने से। इसके अंतर्गत कीमत में थोड़ी सी वृद्धि करने पर ही मांग मात्रा में अथाह परिवर्तन हो जाता है। पूर्ण प्रतियोगी बाजार में AR व MR वक्र की मांग की लोच $e_d = \infty$ होती है।

रेखाचित्र :-

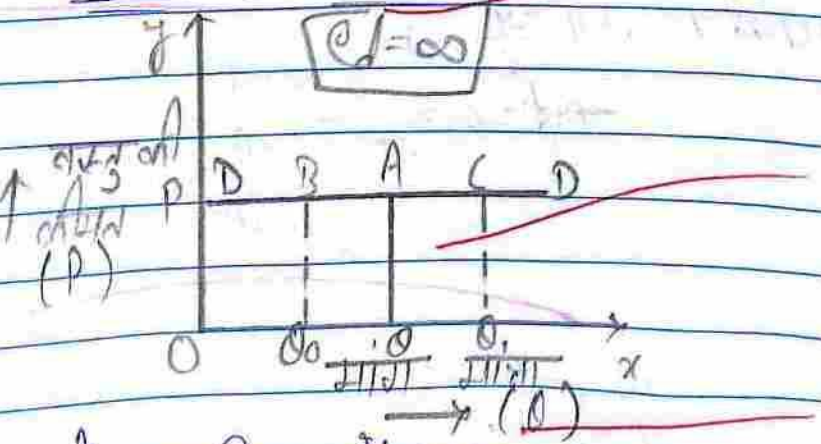

उपरोक्त चित्र में OX अक्ष पर मांग मात्रा व OY अक्ष पर कीमत को दर्शाया गया है। हम देख सकते हैं कि प्रचलित बाजार कीमत OP पर मांग की लोच DD मांग वक्र पर अनंत है अर्थात् OP मात्रा पर OO, OO_0 व OO_1 है। तथा इस स्थिति में मांग वक्र OX अक्ष के समांतर होता है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(2) पूर्णतया बेलोचदार मांग :- ($e_d = 0$)

पूर्णतया बेलोचदार मांग से अभिप्राय जब विभिन्न बाजार कीमतों पर मांग मात्रा की मात्रा स्थिर होती है मांग मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होता है तथा यह स्थिति पूर्णतया बेलोचदार मांग की स्थिति को दर्शाता है। जैसे :- (नमक की) मांग की लोच पूर्णतया बेलोचदार होती है।

रेखाचित्र :-

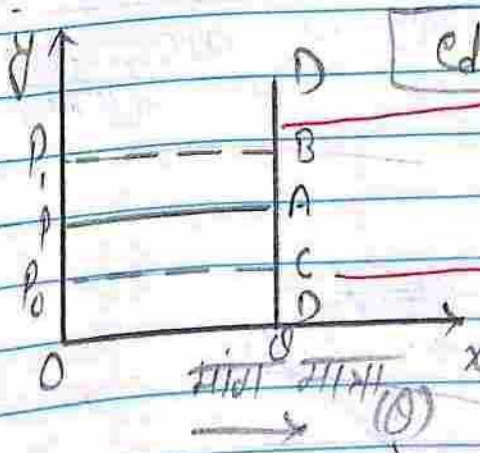

उपरोक्त चित्र में OX अक्ष पर मांग मात्रा व OY अक्ष पर कीमत (P) को दर्शाया (Q) गया है तथा विभिन्न कीमत स्तरों OP_1, OP_0 व OP_1 पर मांग मात्रा OQ निर्धारित है अर्थात् इस स्थिति में उपभोक्ता एक वस्तु की उतनी ही मात्रा का उपयोग करेगा जितनी आवश्यक है। चाहे उस वस्तु की कितनी ही कीमत हो। यहाँ DD मांग वक्र OY अक्ष के समांतर है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

Q29 सीमांत आगम व सीमांत लागत विधि द्वारा फर्म का संतुलन :-

① एकाधिकार तथा अपूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का संतुलन :-

इसके अंतर्गत निम्न दो स्थितियों (शर्तों) को पूरा करना होता है :-

(A) संतुलन बिंदु पर MR = MC होना चाहिए
(B) संतुलन बिंदु पर MC, MR को नीचे से काटते हुए होनी चाहिए।

रेखाचित्र :-

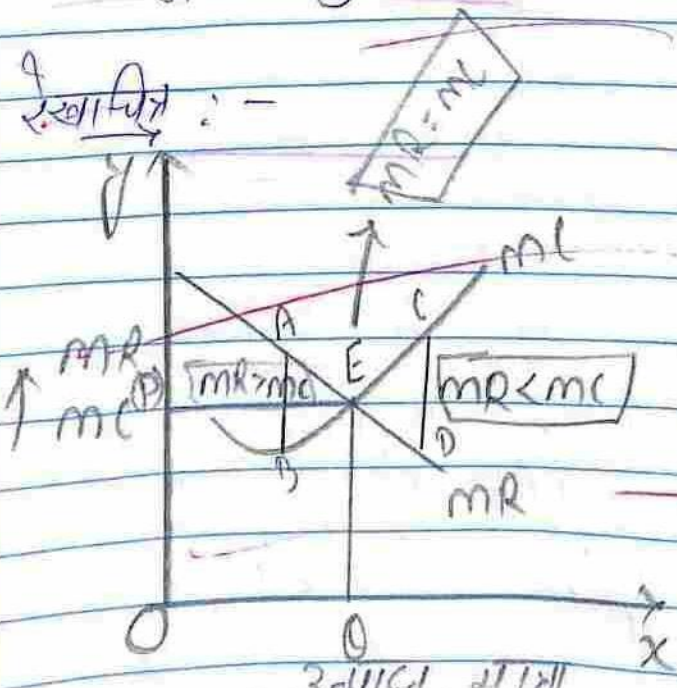

निष्कर्ष :-
उपरोक्त चित्र में OX अक्ष पर उत्पादन मात्रा व OY पर MR, MC है तथा रेखाचित्र में MC वक्र MR को E बिंदु

पर नीचे से काटता हुआ है तथा इस बिंदु पर फर्म की दोनों शर्तों का पालन हुआ है अर्थात E बिंदु पर फर्म OP कीमत पर OQ उत्पादन मात्रा का उत्पादन करता है।
ABE लाभ क्षेत्र है क्योंकि यहाँ MR > MC है। तथा CED क्षेत्र हानि क्षेत्र है क्योंकि यहाँ MR < MC है। अतः फर्म E बिंदु M = MC की स्थिति में अनुकूलतम उत्पादन करेगी।

(2) पूर्ण प्रतियोगी बाजार में फर्म का संतुलन :-

संतुलन की शर्तें :-

(A) संतुलन बिंदु पर MR = MC होना चाहिए

(B) संतुलन बिंदु पर MC वक्र MR वक्र को नीचे से काटता हुआ होना चाहिए।

रेखाचित्र :-

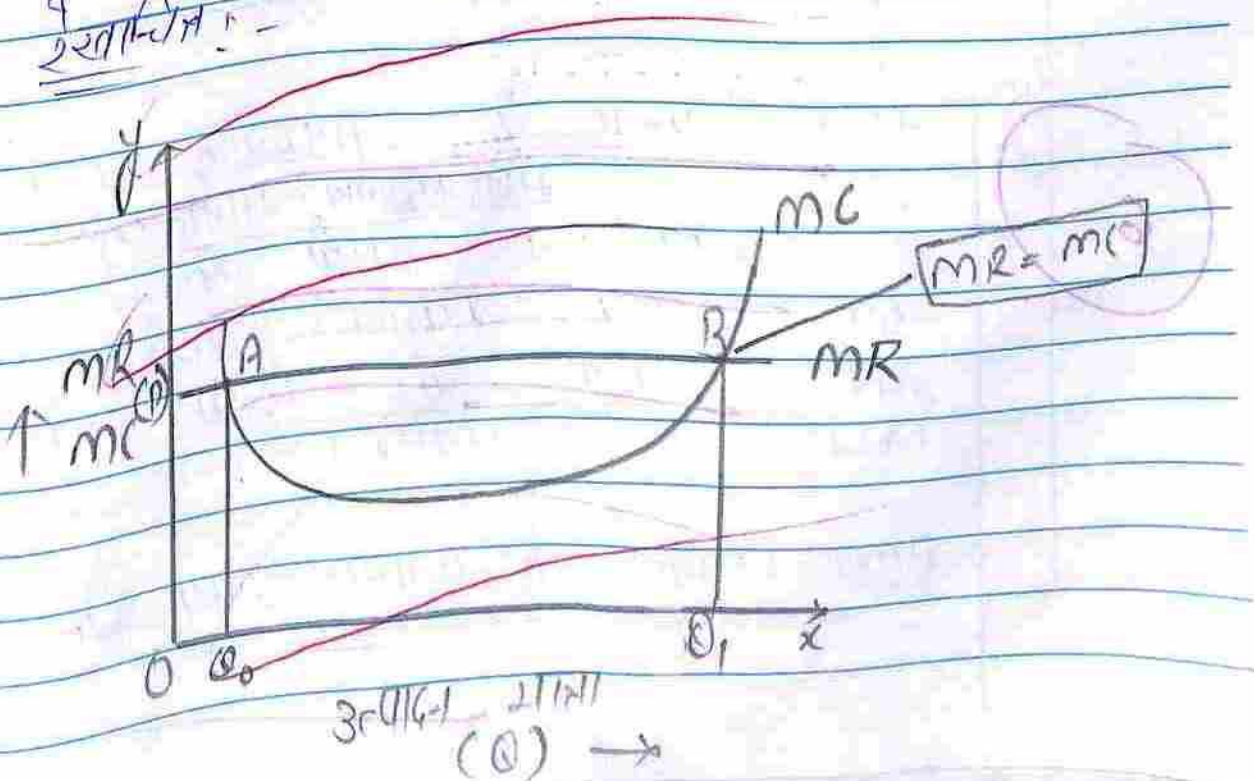

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निष्कर्ष :→
उपरोक्त चित्र में OX अक्ष पर उत्पादन मात्रा (O) तथा OY अक्ष पर MR, MC को दर्शाया गया है। MR फर्म का सीमांत आगम वक्र है। तथा MC फर्म का सीमांत लागत वक्र है।
∵ फर्म के A बिंदु पर MR = MC की शर्त तो पूरी हो रही है तथा यहां MR वक्र को नीचे नहीं काट रहा है इसलिए A बिंदु पर OP कीमत पर OQ_0 उत्पादन मात्रा पर फर्म को न्यूनतम हानि हो रही है।
B बिंदु पर संतुलन की दोनों शर्तें पूरी हो रही हैं क्योंकि यहां MR=MC है तथा MC वक्र MR को नीचे से काटते हुए है तथा A से B के बीच का क्षेत्र लाभ क्षेत्र है। अतः एक फर्म OP कीमत पर OQ_1 उत्पादन करना पसंद करेगी।

Q30 Ans. साख नियंत्रण के मात्रात्मक उपाय :-

मात्रात्मक उपाय :- मात्रात्मक उपायों से आशय उन उपायों से है जो केवल साख नियंत्रण करते हैं इनका उद्देश्य साख की दिशा को प्रभावित करना नहीं होता है।

साख नियंत्रण के मात्रात्मक उपाय निम्न हैं :-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(1) बैंक दर :- बैंक दर से अभिप्राय उस दर से है जिस दर पर केन्द्रीय बैंक, व्यापारिक बैंकों को ऋण उपलब्ध कराता है। दूसरे शब्दों में यह दर जिस पर केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों के बिलों की पुनर्कटौती करता है।

यदि केन्द्रीय बैंक को साख में कमी करनी होती है तो वह बैंक दर को बढ़ा देते हैं जिससे की व्यापारिक बैंकों के ऋण लेने की दशा में कमी आती है।

यदि केन्द्रीय बैंक को साख की मात्रा में वृद्धि करनी होती है तो वह कम बैंक दर पर व्यापारिक बैंकों को ऋण उपलब्ध कराती है।

(खुले बाजार की क्रियायें)

(2) सरकारी प्रतिभूतियों का विनिमय :- सरकारी प्रतिभूतियों के विनिमय से आशय सरकार की प्रतिभूतियों से है। तथा खुले बाजार की क्रियाओं से आशय सरकारी प्रतिभूतियों के लेन देन से है।

यदि केन्द्रीय बैंक को साख की मात्रा में कमी करनी होती है तो वह व्यापारिक बैंकों को प्रतिभूतियों को बेच देती है।

USER: 16/7/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जिससे कि व्यापारिक बैंकों के पास अत्यधिक मात्रा में तरल जमा नहीं हो पाता है। तथा यदि केन्द्रीय बैंक को साख की मात्रा में वृद्धि करनी होती है तो वह सरकारी प्रतिभूतियों को व्यापारिक बैंकों से क्रय कर लेती है। ताकि वह साख सृजन कर सके।

(3) CRR (नकद कोषानुपात) व SLR (वैधानिक तरलता अनुपात के माध्यम से :-

(A) CRR :- CRR से आशय व्यापारिक बैंकों को प्रारंभिक जमाओं का एक निश्चित अनुपात अपने पास रखने का अधिकार होता है। इसे नकद कोषानुपात कहते है।
यदि केन्द्रीय बैंक को साख की मात्रा में वृद्धि करनी होती है तो CRR को कम किया जाता है। तथा यदि साख की मात्रा में कमी करनी होती है तो CRR में वृद्धि की जाती है।

(B) SLR :-
SLR से अभिप्राय व्यावसायिक बैंकों को अपनी जमाओं का एक निश्चित अनुपात रिजर्व बैंक के पास

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रखवाना या जमा करवाना होता है।
यदि केन्द्रीय बैंक (RBI) को साख में वृद्धि करनी होती है तो SLR में वृद्धि की जाती है क्योंकि इसी के आधार पर ही व्यापारिक बैंक व्युत्पन्न जमाओं को ऋण के रूप में उपलब्ध कराकर ऋण खाता खोलकर साख सृजन करती है।
यदि केन्द्रीय बैंक को साख की मात्रा में कमी करनी होती है तो SLR में कमी की जाती है।
साख नियंत्रण का CRR के साथ ऋणात्मक व SLR के साथ प्रत्यक्ष व धनात्मक संबंध होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEK-165/2019

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	

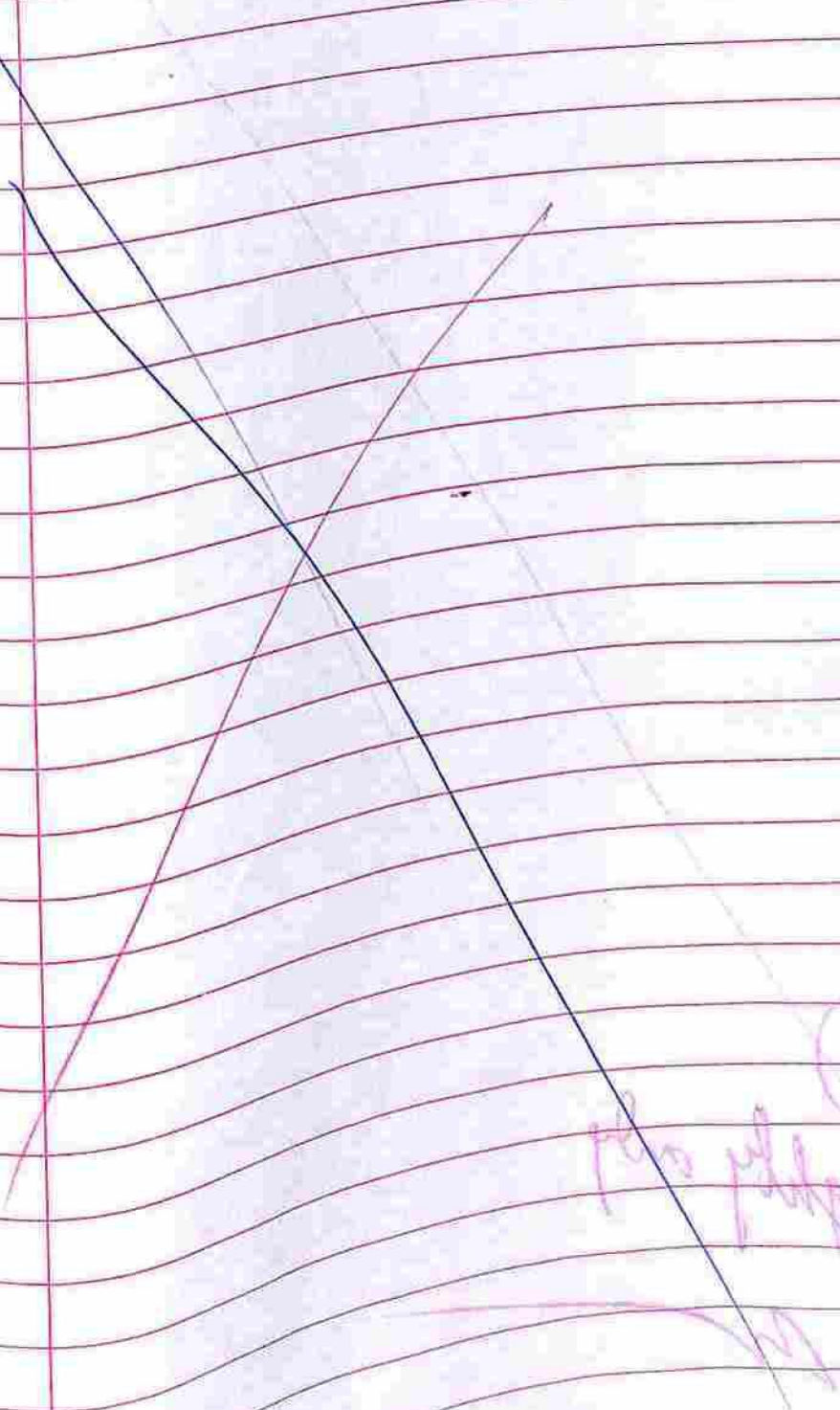

USER-16/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर